Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Rajen
1

(13.B.16.) Hindi Rajen 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Dāṇḍalīlā

and

Nāgalīlā.

Dan Leela

# दानलीला

और

# नागलीला

जिसमें

श्री कृष्णचन्द्र परब्रह्मने राधाआदि गोपियों से
दधि माखन आदि का दानलिया और
कालीनाग को ब्रजवासियों के दुःख
हरणार्थ यमुना जी से निकाल
दावानल पान की

स्थान लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर के छापेखाने में छपी

जनवरी

सन् १८८० ईसवी

छन्द ॥

सदायहीपंथजांय मधुपुरी दानहमसों किनलियो।
दही मांगत छाछ दुर्लभ तौ सुता वृषभान की॥
कंसराय के राज में प्रभु नई रीति न कीजिये।
नंद के घर द्वंद उपजे दुख परे तन छीजिये॥

चौपाई ॥

जबग्वालिनकहीअसिबाता।हंसिबोलेत्रिभुवनदाता
तुमतीनलोकमेंदेखौ। हमकोजिनमानुष लेखौ॥
हमहींसबदैत्यसंहारा। यहकाधौंकंसबिचारा॥
तुमकंसकोकरतगुमाना।तेहिकालिकरौंपिशमाना
अब उग्रसेनभयेराजा।हमहीं अबताहिनिवाजा॥
हठ बादनहमसे कीजे। हंसि दानहमारोदीजे॥

छंद ॥

चारौ बेद पुराण गावै मन मानै सोई करैं।
पराधीन बलहीन जो नर कंसके डरसों डरैं॥
दही गोरस कौन पूछै देखौ अभूषण आपने।
लाल हीरा जटित कंचन मांगमोती अतिघने॥

चौपाई ॥

कित मोतिनमांगबिराजै। कित पायन नूपुरबाजै॥
कितकंठरतनकीमाला।हीरामोती गुथेनंदलाला॥
मधुरे कर कंगन सोहै। नकबेसर सों जगमोहै॥
शिरबेनीगुथीरसभांती। तेहिलागिरतनकीपांती॥
मणिमाणिक काननडोलै।मधुरीकटिकिंकिणिबोलै॥
कित पाटपटम्बर पहिने। कित षोड़श भूषण कीने॥

छन्द ॥

देखु मनहिं विचारि ग्वालिन कुंजवनकीबाट है।
लूटिलेइ कोउ सबै अभरण कौन तुम्हरे साथ है॥
यहां सर्बस दानलागै हठ न कीजै सुन्दरी।
कंसतेंहम डरत नाहीं सुनत बात ग्वालिन डरी॥

चौपाई ॥

एककंकन लेजबदीना। हरिसोंबिनतीबहुकीना॥
कछु थोरबहुतप्रभुलीजै। अबपारसबनको कीजै॥
अकुलायउठींसंगसाथी। अबसांझपरीइहिभांती॥
एकग्वाल करी चतुराई। जिन औघट नावछिपाई॥
एकजायकृष्ण सोंभाषा। प्रभुनावकहांकोउराखा॥
जबकृष्णसबहिंसमुझावैं। अबनावकहांकोउपावैं॥

छन्द ॥

औघट घाट गंभीर यमुना रात को मारग चलै।
बाघ सिंह बटपार बनमें कौन तुम सों भल कहै॥
झूंठिमाया मोह परिजन स्वप्न है दिन चारिको।
कोउ काहुन संग साथी अंत देखु विचारि कै॥

चौपाई ॥

सुनि बातसबै मनमानी। धृक जीवनकेजगजानी॥
हमहैं सबपरमअभागी।नहिंचरणकमलअनुरागी॥
धृकजीवन धनपरिवारा। तुमहींप्रभु नाथ हमारा॥
अबचरणशरणप्रभुदीजै।तनमनधनअपनोकरिलीजै॥
अबरातिपरीअंधियारी।जिनछाड़ियपरमसुरारी॥

छन्द ॥

जन्म हमरोसुफल कीजै हम हरिके चरणन परी।

कुलकिलाज गंवाय ग्वालिनि जन्मजन्म सेवाकरी ॥
रहत मोहन हिलि मिलि ग्वालिनी मन माणिक
दीपकजरैं। श्रीकृष्ण राधे यूथ ग्वालिनि कुंजबन
क्रीड़ा करैं ॥ चौपाई ॥

जहं रासमंडलप्रभुठाना। सबगोपिनकेमनमाना ॥
कोइगंध धूपलैआवै। कोइनैवेद्यकीजुगतिबनावै ॥
कोइतालमृदंगबजावै। कोईधुनिआरतिमंगलगावै॥
कितगीत नृत्यमधुवानी। रासमंडल कृत्यबखानी ॥
जहं राधेकिशोरकिशोरी। दोउकृष्णराधिकाजोरी
जहं राधेजीपानखवावैं। कोइमाथेचंवर डुलावैं ॥

छन्द ॥

जहं राजेंद्र प्रसाद पावै जन्मजन्मके दुखकटैं। राम
श्याम अपार जगमें लेतनाम भवसागर तरैं ॥ जो
नरगावैं दानलीला सुनैंअरु चित लावहीं। विष्णु
लोकमें धाम पावैं कोटि यज्ञ फल पावहीं ॥

इतिश्रीराजेन्द्रविरचितंदानलीला सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ नागलीला ॥

लिख्यते ॥

चरावतगौवनकोधाये। चलतप्रभु कालीदहआये ॥
गोपजलपियेऔरप्याये। पियतजलसबहीमुरझाये ॥

दोहा ॥

पीछे से आये कृष्णजी सबही लिये जिवाय।
निर्मल आजकरूं पटरानी चढ़ कदमपर जाय ॥

गिरतजल यमुनाजी हाली (टेक)

बसतहैं यमुनामें काली। नाथके लायेबनमाली १॥
गयेजब नागिनके आगे। नाग तेरा सोवेकीजागे॥
लुकेक्यों किनकीडरलागे। युद्धमें क्योंनआवेआगे॥

दोहा॥

वांमन मे गरबो घनो काढूं यमुना पार।
हंसत भई मन नागनी बुधिका नहीं बिचार॥

जगावन भरता कों चाली (टेक)

नागसेनागिनउठिबोली।दीठएकबालकआयामोली॥
लगीजबतिरियाकीबोली। पलकजबकालीनेखोली॥

दोहा॥

बिष ज्वालामुखसे चली चरण डसन ब्रजराज।
निर्भय ह्वै रिस भरचलो तन लिपटन के काज॥

आंठ जब मोह नत न घाली ३॥

भएजहंगोकुलउतपाता।तातदुखउपजतअतिमाता॥
संगनहिंबलदोऊभ्राता। बिकलभएब्रजबासीगाता॥

दोहा॥

यमुना जीके तीर पै संग मिलि कियो बिलाप।
दुखिया देख तात महतारी देह बधाई आप॥

नाथ जब काली के घाले॥ ४॥

नाथकरबाहरकूंआये। सकलब्रजदर्शनकोधाये॥
उठेजबआनन्दहोआये।अमरजबघनघनमेंछाये॥

दोहा॥

फन फन नाचें कृष्ण जी बंशी लीनी हाथ।
सोफन ऊंचो उठे नाग का तिसके मारे लात॥

बजावतगन्धर्व दे ताली । नाथ केलायेबनमाली ॥५॥
जोरकरनागिनकहवायकनाथतुमदुष्टनभयेदायक॥
दुष्टभयेदीननके सहायक । आपसेनहींयुद्धलायक ॥

दोहा ॥

तुम कर्त्ता संसार के हम योनिन में नाग ।
जैसेयाच याच की नारी बक सो मेरो सुहाग ॥

शरणमें तुम्हरी अब आई ( टेक )

बसतहैंयमुनामेंकाली । नाथकेलायेबनमाली ॥ ६ ॥
दयाजबनागिनकीआई । तुरतहंसिबोले कंन्हाई ॥
गर्वकी बातैं जो पाई । सजा दी थोरेही ताई ॥

दोहा ॥

अब विष जल कैसें रहै हम यहां आवैं हमेश ।
अब तुमको डर नाहीं गरुड़ को जाओ अपनेदेश ॥

करो इस यमुनाको खाली ।

बसतहैंयमुनामेंकाली ॥ नाथकेलायेबनमाली॥७॥
पुनकेहर कालीदहआये । गोपकाऐसे जनपाये ॥
कुटुम्बलेअपनेघरआये । दानपुन्यसबही करवाये ॥

दोहा ॥

फिर दावानल पान से व्रज कोकियो आनन्द ।
गंगाधर निर्भय कर काली कृपाकरो गोबिन्द ॥

भयो डर निर्भय जन पाली ॥

बसतहैं यमुनामेंकाली ॥ नाथकेलायेबनमाली ॥ ८ ॥

इति श्रीगंगाधर कृत नागलीला सम्पूर्णम् ॥

शुभम्भूयात्

---